JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नयी कविता की दिशा और दृष्टि : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.सियाराम मीणा
सह आचार्य हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय,कोटा
9413129093
drsrmeena2373@gmail.com

सारांश

नयी कविता की दृष्टि आधुनिक बोध से परिपूर्ण है। वह भाव–बोध और शिल्प के स्तर पर अन्वेषण में विश्वास रखती है, इसलिए वह ज्ञात से अज्ञात की ओर, परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ती है। नये कवि की दृष्टि एक विश्वदृष्टि है, व्यापक दृष्टि है, एक अन्वेषी की आँख है, उसकी कोई एक राह नहीं है, वह जहाँ भी होती है, उसे चार–चार राहें एक साथ नजर आती हैं। नयी कविता की दृष्टि परिवेश के प्रति प्रश्नाकुल, यथार्थवादी और मूल्यान्वेषी है। नये कवि की मूल्यान्वेषी दृष्टि यथार्थ में गहरी डुबकी लगाकर मोती ग्रहण करने वाली है । वास्तव में नयी कविता की दृष्टि एक सर्वथा स्वतंत्र, बौद्धिक, वैज्ञानिक और संवेदनशील मानव की दृष्टि है।

नयी कविता की इस बौद्धिक, विवेकशील और प्रयोगशील दृष्टि ने उसके कथ्य और शिल्प को भी व्यापक स्तर पर प्रभावित करके उसे नयी दिशाएँ प्रदान की हैं। नयी कविता की प्रयोगधर्मिता, परिवेशधर्मिता, मूल्यबद्धता और स्वातंत्र्य भावना ने उसकी दिशाओं को निर्मित किया है। प्रयोगवादिता की दिशा, परम्परा से आगे बढ़ने की दिशा, अस्वीकृत मूल्यों के प्रति विद्रोहात्मकता की दिशा, व्यक्तिवादिता और यांत्रिकता की दिशा, अस्मिता का संघर्ष एक प्रमुख दिशा, शहरी संवेदना की दिशा, अनास्था और आक्रोश से गुम्फित कुण्ठा और विसंगति की दिशा, समसामयिक चेतना के प्रति जागरूकता की दिशा, नारी स्वातंत्र्य की दिशा, प्रतीक, बिम्ब, क्षण और अस्तित्व चेतना की दिशा, अनगढ़ और अलगाव की दिशा, देशी–विदेशी वादों को अपनाने की दिशा, मिथक और फंतासी के प्रयोग की दिशा, दुरूहता आदि। प्रस्तुत शोध–पत्र में नयी कविता के इसी दृष्टिबोध और विविध दिशाओं पर मौलिक ढंग से विचार करना है।

कुंजी शब्द : नयी कविता, अन्वेषण, भाव–बोध, परिवेश, रागात्मकता, समाजोन्मुखी व्यक्तिचेनता लघुमानव, जीवन मूल्य, आधुनिक बोध, युगीन यथार्थ, प्रयोगशीलता, यांत्रिकता, नारी स्वातंत्र्य, अलगाव, दुरूहता, असम्प्रेषणीयता, इतिहास बोध, युगबोध, आधुनिकता बोध, वैज्ञानिक मानसिकता, कथ्य, शिल्प, दिशा और दृष्टि।

अध्ययन का उद्देश्य : नयी कविता आधुनिक काल की महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धी है। दृष्टि की उच्चता और दिशा की व्यापकता किसी भी काव्यधारा या आन्दोलन को महत्वपूर्ण बनाने वाले मुख्य कारक होते हैं। नयी कविता की दृष्टि बौद्धिक, विवेकशील और प्रयोगशील है तो प्रयोगधर्मिता, परिवेशधर्मिता, मूल्यबद्धता और स्वातंत्र्य भावना से निर्मित दिशाएं अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। यह कहा जा सकता है कि दृष्टि बोध और दिशाओं की दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहास में यह काव्यान्दोलन अपने आप में नया और अनूठा है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य नयी कविता की सृजनधर्मिता की गहन पड़ताल करते हुए मौलिक ढंग से इसके दृष्टि बोध और दिशाओं पर प्रकाश डालना है।

साहित्यावलोकन वा साहित्य समीक्षा : नयी कविता का रचना फलक जितना व्यापक और विस्तृत है उतना ही विस्तृत रूप नयी कविता की व्याख्या, विवेचन, आलोचना और समीक्षा का है। नयी कविता पर न केवल समीक्षकों और आलोचकों ने प्रकाश डाला है या आलोचना की है अपितु स्वयं रचनाकार कवियों ने भी अपनी कविता, काव्यमानों, रचना प्रक्रिया व वैचारिकता पर यथावसर प्रकाश डाला है। अतः कहा जा सकता है कि नयी कविता के पर्याप्त मानक समीक्षा ग्रंथ उपलब्ध है। लेकिन फिर भी साहित्यिक रचनाओं की आलोचना की संभावना हमेंशा बनी रहती है। नयी कविता : देवराज, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 110002 आवृत्ति 2009, नयी कविता : आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, 1976, नयी कविता के प्रतिमान– लक्ष्मीकांत वर्मा–भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहबाद, संवत 2014, नयी कविताः सीमा और संभावनाएं–गिरिजाकुमार माथुर अक्षर प्रकाशन दिल्ली, 1966, प्रयोगवाद और नयी कविता–शंभुनाथ सिंह, समकालीन प्रकाशन वाराणसी 1966, तार सप्तक सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ 1998, दूसरा सप्तक सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ 1996, तीसरा सप्तक सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, 1996,

नयी कविता :स्वरूप और समस्याएं–जगदीश गुप्त, भारतीय ज्ञानपीठ कलकत्ता,1968, नयी कविता का मूल्यांकन : परंपरा और प्रगति की भूमिका पर :डॉ.हरिचरण शर्मा आशा प्रकाशन गृह,नयी दिल्ली 1972, नयी कविताःनये धरातल–डॉ.हरचिरण शर्मा पदम प्रकाशन जयपुर, नयी कविता के प्रबंध काव्यः शिल्प और जीवन दर्शन –डॉ.उमाकांत गुप्त प्र.सं.वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1988, नई कविता : स्वरूप और प्रवृत्तियां–उषा कुमारी, प्रभात प्रकाशन, 2017 आदि कई आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित है जिसमें नयी कविता के विविध आयामों में गंभीर चिंतन और आलोचना है। आज भी नयी कविता पर लिखा जा रहा है यथा–डॉ.शोभा श्रीवास्तव का लेख 15 अक्टुबर 2020 नई कविता का आत्म संघर्ष– मुक्तिबोध http://m.sahityakunj.net/entries/view/nai-kavita-ka-aatm-sangharsh-muktibodh, मनोज भारती का लेख 'नयी कविता की प्रवृत्तियां' 21 अगस्त 2012, http://hindikaitihaas.blogspot.com/2012/08/blog-post_21.html; *emarking An Analisation* VOL-5* ISSUE-9* December- 2020 **सं.डॉ. राजीव कुमार मिश्रा डॉ. सियाराम मीणा का लेख–** नयी कविता का वैशिष्ट्यः आधुनिक हिन्दी कविता से पार्थक्य के संदर्भ में एक अध्ययन; हिन्दी कुंज .कॉम में प्रकाशित लेख– नयी कविता की विशेषता प्रवृत्तियां 2018.5.12 https://www.hindikunj.com/2018/05/nayi-kavita.html. आदि।

प्रस्तावना :

नई कविता नए वैचारिक तेवर के साथ साहित्य जगत में एक नवीन भाव भूमि की सृष्टि करती दिखाई देती है। इस विचारधारा के अंतर्गत जिसे रूढ़ियों का विरोध करना कहा जाता है दरअसल वह प्रक्रिया सुधारवादी विचारधारा के अंतर्गत 'बेहतर' के लिए अन्वेषण करती हुई प्रतीत होती है।[1] नयी कविता की दिशा और दृष्टि दोनों ही पूर्ववर्ती काव्यधाराओं की अपेक्षा व्यापक है। यह परिवेश के दबाव और तनाव में लिखी गयी कविता हैं, किसी विचारधारा विशेष के दबाव से नहीं। उसमें 'कथ्य की व्यापकता और दृष्टि की उन्मुक्तता'[2] नयी कविता में विशेष है। एक विवेक सम्पन्न बौद्धिक और संवेदनशील दृष्टि इन कवियों को प्राप्त थी, यही कारण है कि इसमें मानव और परिवेश की नितान्त समसामयिक बौद्धिक, संवेदनशील और मूल्योन्मुख व्याख्या मिलती है। 'नयी कविता के भावबोध में तर्क, बुद्धि, विवेक, आधुनिक बोध और युगीन यथार्थ का योग है। नयी कविता का भाव बोध किसी वाद से या संकुचित धारणा से नहीं, परिस्थितियों की जटिलता से उत्पन्न होता है तथा विवेक और बुद्धि के धरातल पर तपकर जीवन की रागात्मकता को व्यक्त करता हैं।'[3] वास्तव में नयी कविता की जीवन के प्रति, साहित्य के प्रति, परिवेश के प्रति एक विशेष और व्यापक दृष्टि है। डॉ. जगदीश गुप्त ने इसे 'ऋषि दृष्टि' कहा है – ''ऋषि दृष्टि से तात्पर्य उस निर्भीक सत्यानवेषी दृष्टि से है जो सुन्दर, असुन्दर, मधुर–तिक्त, रूचिर–कटु, सरल–जटिल, बहिरन्तर वैविध्यमय एवं अनेकमुखी जीवन को समग्र रूप में स्वीकार करते हुए हर वास्तविकता को विवेकयुक्त तटस्थ भाव से देखती है। ऐसी दृष्टि एकदेशीय न होकर सार्वभौमिक होती है। किसी नये अर्थ या तथ्य के उपलब्ध होने पर वह उससे अभिभूत तो होती है, पर आच्छन्न नहीं। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बड़ी से बड़ी अनुभूति को प्रगाढ़ आत्मविश्वास के साथ, बिना अपनी अनुभूति को बिखराए या विचलित प्रज्ञ हुए धारण करने की क्षमता रखती है। वह केवल एक दृष्टि ही न होकर तथ्य तक पहुँचने की एक विधा भी हे, जिसकी प्राप्ति गहरे आत्ममंथन और अनुभव की परिपक्वता के बाद ही प्राप्त होती है।''[4] जगदीश गुप्त के कथन से स्पष्ट है कि नयी कविता की दृष्टि विवेक और यथार्थ से युक्त है। यही कारण है कि वह हमारे परिवेश को उसकी सम्पूर्णता और गहराई के साथ देख सकी एवं अभिव्यक्त कर सकी। नयी कविता की दृष्टि भाव–बोध ओर शिल्प के स्तर पर अन्वेषण में विश्वास रखती है, इसलिए वह ज्ञात से अज्ञात की ओर, परिचित से अपरिचित की और बढ़ती है। नये कवि की दृष्टि की विशेषता यह है कि वह एक विश्वदृष्टि है, व्यापक दृष्टि है, एक अन्वेषी की आँख है, उसकी कोई एक राह नहीं है, वह जहाँ भी होती है, उसे चार–चार राहें एक साथ नजर आती हैं। उसकी संवेदनशीलता इतनी व्यापक है कि उसे पत्थर में भी हीरा नजर आता है, वह एक पैर रखता है तो सौ–सौ राहें फूट पड़ती है। यह उसकी व्यापक दृष्टि का ही परिणाम है। 'मुझे कदम कदम पर' शीर्षक कविता में मुक्तिबोध ने इसी दृष्टि का परिचय देते हुए लिखा है ––

मुझे कदम कदम पर / चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाये / एक पैर रखता हूँ / कि सौ राहें फूटतीं
मैं उन सब पर से गुजर जाना चाहता हूँ,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में/ चमकता हीरा है
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक प्राणी में,
महाकाव्य पीड़ा है।[5]

नयी कविता प्रयोगवाद का निखरा और समष्टिगत रूप है। नयी कविता ने प्रयोगवाद की संकुचितता से ऊपर उठकर उसे अधिक उदार और व्यापक बनाया ।[6] नयी कविता की दृष्टि यथार्थ दृष्टि है। आज का युग विविधोन्मुखी हास और पतन का युग है। मानव मूल्यों एवं जीवन के उच्चतम मानदण्डों में निरन्तर गिरावट आयी है। चौतरफा युद्ध, हिंसा, तनाव, टूटन, विकृति, अनास्था, मर्यादाहीनता, नवीन पुरातन का संघर्ष, भय, संत्रास, कुंठा, विसंगतियाँ, लोकतांत्रिक जीवन का हास, अलगाव, अकेलापन, विवशता और असहायता उपस्थित है और नयी कविता की यथार्थ दृष्टि इस दंश भरे यथार्थ को बखूबी देख पाई है ––

आज के अभाव के व कल के उपवास के
व परसों की मृत्यु के ...
दैन्य के, महा–अपमान के, व क्षोभपूर्ण
भयंकर चिन्ता के उस पागल यथार्थ का
दीखता पहाड़ ––/ स्याह।[7]

नयी कविता की दृष्टि परिवेश के प्रति प्रश्नाकुल, यथार्थवादी और मूल्यान्वेषी है। नये कवि की मूल्यान्वेषी दृष्टि यथार्थ में गहरी डुबकी लगाकर मोती ग्रहण करने वाली है, उस मोती को परखने की दृष्टि भी उसके पास है। प्रयागनारायण त्रिपाठी ने लिखा है कि ''कवि तो मानो वह पनडुब्बी है जो वर्तमान के अनुकूल सागर में डूबकर, तल में स्थित सीपी का मुँह चीरकर, मोती निकाल ले आती है और आपको सौंप देती है। ... कविता का साध्य तो यथार्थ का तलस्पर्शी, सुन्दर और प्रेषणीय चित्रण है।''[8] इस दृष्टि से कवियों ने पुरातन मूल्यों की परीक्षा की है, उन्हें अभिव्यक्ति दी है और नवीन सत्यों और मूल्यों का संधान किया है। कुँवरनारायण का यह कथन द्रष्टव्य है ––

मिल सके अगर तो
एक दृष्टि चाहिए मुझे –
जीवन बच सके
अँधेरा हो जाने से – बस।[9]

नयी कविता ने विकासशील जीवन मूल्यों की स्थापना की है। नयी कविता की यथार्थ और प्रश्नाकुल दृष्टि पर विचार करते हुए डॉ. रामदरश मिश्र ने लिखा है कि ''नयी कविता की प्रश्नाकुल दृष्टि इन मूल्यों (परम्परागत) को उनकी विसंगतियों के बीच देखती है। इसलिए जहाँ ये मूल्य अपनी उन असंगतियों के कारण तीखे व्यंग्य का भाजन बनते हैं, वहीं नये संदर्भों में भी सिद्ध होने वाली उपयोगिता के कारण आस्था का आधार। नये मूल्यों की परीक्षा का क्रम नया नहीं है। हर युग ने नये मूल्यों को संदर्भ में कसा है, किन्तु इन युगों की कविताओं के सामने समाधान के तोर पर कोई आदर्शवाद उतरकर आता रहा है और प्रश्नाकुलता का स्थान भावात्मक मानवतावादी आस्था लेती रही है, परन्तु नयी कविता की यथार्थवादी दृष्टि काल्पनिक या आदर्शवादी या भावुकतामिश्रित मानववाद से सन्तुष्ट न होकर जीवन का मूल्य, उसका सौंदर्य, उसका प्रकाश जीवन में ही खोजती है। वर्तमान की गहन निराशा और बिखराव के बीच वह ज्योति के लिए प्रतीक्ष्यमान है।''[10]

वास्तव में नयी कविता की दृष्टि एक सर्वथा स्वतंत्र, बौद्धिक, वैज्ञानिक और संवेदनशील मानव की दृष्टि है। वह न अतिमानव की दृष्टि है, न दानव की दृष्टि है, वह यथार्थ और विवेकशील व्यक्ति की दृष्टि है। डॉ. हरिचरण शर्मा ने नयी कविता की इसी दृष्टि को 'शुद्ध मानव दृष्टि' बतलाया है ''नयी कविता इतनी आदर्श की चिन्ता नहीं करता जितनी यथार्थ की। यथार्थ उसके युग का है, उसके समय का है, उससे सम्बन्धित समाज का है और उसके जैसे मानव का है। वह जो कुछ देख रहा है, न तो किसी देवता की दृष्टि से देख रहा है और न किसी दानव की दृष्टि से। उसकी अपनी दृष्टि है और शुद्धतः मानव दृष्टि है।''[11] दृष्टि की इसी विशिष्टता ने उसे समय सापेक्ष बनाया है। इस अर्थ में नयी कविता की दृष्टि समय सापेक्ष दृष्टि है। वह एक ऐसी दृष्टि है जो अपने समय के सम्पूर्ण परिवेश को देखकर अपनी राह बनाती है। धर्मवीर भारती ने इसी मंतव्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''मैं अपने को स्वतः मैं सम्पूर्ण, निस्संग, निरपेक्ष सत्य नहीं मानता। मेरी परिस्थितियाँ, मेरे जीवन में आने और आकर चले जाने वाले लोग, मेरा समाज, मेरा वर्ग, मेरे संघर्ष, मेरी समकालीन राजनीति और समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, इन सभी का मेरी कविता के रूप–गठन और विकास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भाग रहा है ... कवि का जीवन, कवि की वाणी, अर्पित जीवन और अर्पित वाणी होते हैं।''[12]

नयी कविता की दृष्टि वाद मुक्त दृष्टि है, यह नयी कविता का वैशिष्ट्य है। गिरिजाकुमार माथुर ने इसे 'अप्रतिबद्ध सामाजिकता की दृष्टि'[13] कहा है। नयी कविता समवेत स्वर में मानव मुक्ति का प्रयास करती है। उसने अपने समयानुसार दृष्टि में परिर्वतन किया है। ''नयी कविता अनुभूति और अभिव्यक्ति की नयी व्यवस्था है। वह एक ऊर्जावान संलाप है। युग की प्रकृति के अनुसार काव्य–दृष्टियों में क्रांतिकारी परिवर्तन करने का प्रयास किया है तथा मानव मुक्ति के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।''[14] अन्तिम रूप से यह कहा जा सकता है कि नयी कविता की दृष्टि यथार्थ दृष्टि हैं, समय सापेक्ष है, सत्यान्वेषी और मूल्यान्वेषी है, प्रयोगशील है, उन्मुक्त है, व्यापक है, वादमुक्त है, विवेकसम्पन्न और बौद्धिक है।

नयी कविता की इस बौद्धिक, विवेकशील ओर प्रयोगशील दृष्टि ने उसके कथ्य और शिल्प को भी व्यापक स्तर पर प्रभावित करके हिन्दी कविता को नयी दिशाएँ प्रदान की हैं। नयी कविता से पूर्व की काव्यधाराओं में दृष्टि की **सीमितता** और वादबद्धता के कारण उनका कथ्य और शिल्प भी उसी का अनुगामी था, लेकिन नयी कविता की बौद्धिक उन्मुक्तता ने उसे कई दिशाएँ प्रदान कीं। नयी कविता में कथ्य की व्यापकता का समावेश हुआ, ऐसा लगता है कि नयी कवित पूर्ण स्वतंत्रता के भाव से परिचित है, वास्तव में वह ''स्वतंत्रता के युग से परिचित है – कथ्य में स्वतंत्र, तथ्य में स्वतंत्र, शिल्प में स्वतंत्र, स्वतंत्र ही स्वतंत्र। इसका छन्द स्वभावतः स्वतंत्र है।''[15] केदारनाथ सिंह की 'फूल को हक दो', माटी को हक दो' कविताएँ इस स्वातंत्र्य भावना का निरूपण करती हैं। नयी कविता की इस स्वतंत्र भावना ने भाव–विस्तार और वस्तु–विस्तार को बढ़ाया, साथ ही दशी–विदेशी आन्दोलनों, बदलती हुई परिस्थितियों एवं बदलती हुई संवेदनाओं ने भी उसके शिल्प की दिशा में युगान्त उपस्थित किया। वस्तुतः नयी कविता की प्रयोगधर्मिता, परिवेशधर्मिता, मूल्यबद्धता और स्वातंत्र्य भावना ने उसकी दिशाओं को निर्मित किया है। नयी कविता का व्यक्तित्व बहुआयामी है। डॉ. उषा कुमारी ने नयी कविता की दिशाओं पर विचार करते हुए उसकी प्रवृतिधर्मी दिशाओं का उल्लेख किया है। जैसे ''प्रयोगवादिता की दिशा, अपरम्परित या परम्परा से आगे बढ़ने की दिशा, अस्वीकृत मूल्यों के प्रति विद्रोहात्मकता की दिशा, व्यक्तिवादिता और यांत्रिकता की दिशा, मशीनीकरण : अस्मिता का संघर्ष एक प्रमुख दिशा, शहरी संवेदना की दिशा, अनास्था और आक्रोष से गुम्फित कुण्ठा और विसंगति की दिशा, समसामयिक चेतना के प्रति जागरूकता की दिशा, नारी स्वातंत्र्य की दिशा, देश की बीहड़ परिस्थितियां से प्रभावित होने की दिशा, विदेशी आंदोलनों से प्रभावित होने की दिशा, प्रतीक, बिम्ब, क्षण और अस्तित्व चेतना की दिशा, अनगढ़ और अलगाव की दिशा, देशी–विदेशी वादों को अपनाने की दिशा, व्याकरणिक स्वेच्छाचारी प्रयोग की दिशा, मिथक और फंतासी के प्रयोग की दिशा, दुरूहता, असम्प्रेषणीयता, लोकोक्ति, मुहावरे की दिशा आदि।''[16] वस्तुतः इन दिशाओं से नयी कविता की विविध प्रवृत्तियां को ही रेखांकित किया गया है जिनसे इसकी बहुआयामी दिशाओं का ज्ञान होता है।

वास्तव में नयी कविता की सबसे अहम् दिशा इतिहास बोध, युगबोध, आधुनिकता बोध और वैज्ञानिक मानसिकता से सम्पन्न यथार्थ बोध की दिशा है। कतिपय अनेक दिशाएँ इसी के विविध आयाम हैं यथा – युगीन परिवेश, जीवन की जटिलता, शहरी और मध्यमवर्ग की द्वन्द्वग्रस्तता, दैन्य, विशमता, उत्पीड़न, भय, संत्रास, विसंगति, अलगाव, टूटन, बिखराव, यांत्रिक और भौतिक जीवन की पीड़ा, अनास्था, अकेलापन, निराशा, मूल्य संकट, अस्तित्व चिन्ता, विवशता, क्षणबोध, योन कुण्ठा, लोकतांत्रिक मूल्यों का विघटन, युद्ध, हिंसा, शांति, नारी स्वातंत्र्य, आस्था, आशा, मूल्यान्वेषण और सत्यान्वेषण, सामान्य मानव की पीड़ा और संघर्ष, लघुमानव आदि। नयी कविता के आधुनिकता बोध, मूल्यबोध और यथार्थ चेतना ने जहाँ हमारे समाज की पतनशील प्रवृत्तियों का चित्रण किया है, वहीं उससे उभरकर सार्थक जीवन जीने और जीवन को गतिशील बनाने की आकांक्षा भी व्यक्त की है। नयी कविता के सभी कवियों – सप्तकीय और सप्तकोत्तर – ने इस दिशा को विविध स्तरों पर व्यंजित किया है। डॉ. रामप्रसाद मिश्र ने लिखा है कि ''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता की सबसे अधिक पावन एवं सबसे अधिक प्रकाशमयी दिशा, पूर्व दिशा, प्राची दिशा, यथार्थवाद की दिशा है। इस यथार्थवाद को भिन्न–भिन्न कवियों ने भिन्न–भिन्न रूपों में अपनाया है ... स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता न आकाश की कविता है, न पाताल की, न राम की, न रावण की, न उदात्त की, न अनुदात्त की, वह जीवन की कविता है, वह यथार्थ की कविता है, वह तथ्य की कविता है, वह बुद्धि की कविता है। उसमें आकाश भी है, पाताल भी है, राम भी है, रावण भी है, उदात्त भी है, अनुदात्त भी है पर 'भी– की स्थिति में ही, क्योंकि वह जीवन की सहज कविता है और उसका कथ्य जीवनव्यापी है, एक क्षेत्रीय या द्विक्षेत्रीय मात्र नहीं।''[17] आज की आस्थाहीन और खोखली जीवन स्थिति का यथार्थ चित्र द्रष्टव्य है ––

एक स्तर पर/ विद्वेष, क्रूरता, हिंसा, बेईमानी,
सब कुछ इतना सम्भव है कि स्वाभावित लगे,–
और उसी स्तर पर हममें से हर एक जी सकता है
पागलों की तरह
एक दूसरे से त्रस्त, पीड़ित और अपमानित।[18]

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मिली असफलता के यथार्थ को उजागर करते हुए भारती ने लिखा है ––

हम थे सैनिक अपराजेय / पर हम थे बेबस लाचार
यह था कठपुतलों का खेल/ ऊपर थी कलई ––
पर लकड़ी के थे सब हथियार।[19]

नये कवियों ने हमारे यथार्थ को छिपाया नहीं, कविता का विषय बनाया है, इसलिए उनका यथार्थ सीमातीत लगता है, लेकिन यथार्थ के नाम पर नयी कविता की दिशा पतनोन्मुख मूल्यों की दिशा ही नहीं है, उसका आधुनिकता बोध मूल्यान्वेशण, सत्यान्वेशण, अस्तित्व चेतना और गतिशील चेतना से युक्त है। नये कवियों ने बैसाखियों के सहारे, बालू के ढेर पर चलते इतिहास के करूण प्रयास को अच्छी तरह महसूस किया था, इसलिए रागात्मकता और मूल्यों के सहारे उसे शक्ति प्रदान करने का अद्‌भुत कार्य किया है। महाप्रस्थान में नरेश मेहता ने विश्वास, प्रेम, करूणा आदि मूल्यों की स्थापना करते हुए लिखा है ––

करूणा मेरा धर्म है भीम!/ किसी भी सम्बन्ध
साम्राज्य या शक्ति के सामने/मैं इसे नहीं छोड़ सकता।
विश्वास करो/धर्म के मूल्य पर
मैं स्वर्ग भी अस्वीकार कर सकता हूँ भीम!![20]

समाजोन्मुखी व्यक्तिचेनता भी नयी कविता की विशिष्ट दिशा है। नयी कविता में अहम् भी है, उसका विलयन भी, स्वतंत्रता भी, दायित्व भी, व्यक्तित्व निर्माण की तीव्र इच्छा भी और दायित्व में समर्पण भी। उसका अहम् समाज से कटा हुआ नहीं, दायित्व बोध से युक्त है ––

अहम् का विस्तार–
है दायित्व भी दर्द भी
भोग या सुख ही नहीं।[21]

नया कवि व्यक्तित्व निर्माण और स्वतंत्रता की जितनी प्रबल इच्छा रखता है, सामाजिक दायित्व भावना भी उतनी है। भारती का 'टूटा पहिया', अज्ञेय की 'नदी के द्वीप' कविताएँ इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं। नयी कविता में सामान्य मानव और लघुमानव को भी विशिष्ट महत्व मिला है। नयी कविता में परंपरा और रूढ़ि से आगे बढ़ने की आकांक्षा व्यक्त हुई है। वह ऐसे किसी गलित मूल्य को वहन करने में सक्षम नहीं है जो मानव समाज की गतिशीलता में बाधक हो। उसने विवेक और तर्क के सहारे उसकी परम्परा का परीक्षण किया है, यह भी इसकी एक दिशा है। नयी कविता की एक विशेष दिशा यह भी रही है कि उसने उन्मुक्त भाव से विविध देशी–विदेशी वादों और चिंतनधाराओं को ग्रहण किया है और परिवेश के अनुकूल उनका प्रयोग किया है। इसमें द्वन्द्वात्मक भौतिकतावाद, मनोविज्ञानवाद, विकासवाद, मानवतावाद, आधुनिक विज्ञानवाद, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, अस्तित्ववाद, प्रतीकवाद, प्रकृतवाद, बिम्बवाद, यथार्थवाद आदि कई मिलकर आंतरिक और बाह्य परिवेश का अंकन कर सके हैं। उदाहरण के लिए अस्तित्ववाद को ही लें तो उसकी सम्पूर्ण प्रवृतियाँ रचनात्मक धरातल पर नये कवियों ने अपनायी है। यथा – मृत्यु, ईश्वर, नैराश्य, कुण्ठा, संत्रास, अनास्था, अवसाद, अविश्वास, अस्तित्व की खोज, आस्था, विश्वास, कर्मशीलता आदि सभी मिलती है। भारती का यह उदाहरण द्रष्टव्य है ––

निश्क्रियता नहीं/ आचरण में ही
मानव– अस्तित्व की सार्थकता है।[22]

शिल्प के स्तर पर प्रयोगशीलता नयी कविता की सर्वथा नयी और अभूतपूर्व दिशा है। इसने भाषा, शब्द, उपमान, प्रतीक, बिम्ब, छन्द, लय आदि सभी क्षेत्रों में प्रयोग को लाभप्रद मानकर उसका उपयोग किया है। नयी कविता की भाषा में साधारणता और असाधारणता का अपूर्व संगम है। साधारणता इसलिए कि इसमें परम्परागत अभिजात्य को तोड़कर साधारण बोलचाल की भाषा और शब्दों को अपनाया गया है, असाधारण इसलिए कि इसमें अर्थवता की असाधारण क्षमता है। नयी कविता ने तत्सम शब्दों का मोह छोड़कर तद्भव, देशज, आंचलिक तथा नवीन शब्दों का प्रयोग कर उनमें अद्भुत अर्थवत्ता और बिम्बात्मकता का संयोग किया है। लोक–व्यवहार और तद्भव शब्दों के प्रयोग से कविता और जीवन परस्पर निकट प्रतीत होते है। नये कवि ने यहाँ तक कह दिया है कि ''जिस तरह हम बोलते है, उस तरह तू लिख और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख''। भाषा के इस जनतांत्रिक स्वरूप ने उसके प्रतीक, बिम्ब, अप्रस्तुत में एक क्रांति उपस्थित कर दी। गंभीर अर्थयुक्त होकर भी वह सामान्य जन के निकट की वस्तु बन गयी।

डॉ. हरिचरण शर्मा ने शिल्पगत नवीन दिशा का परिचर देते हुए लिखा है कि ''शिल्प के क्षेत्र में भी आधुनिकता का नया पहलू विकसित हुआ है। भाषा में सही शब्दों का चुनाव, साधारण शब्दों से बड़ी बात कहने की प्रवृत्ति, प्रतीकों में बोलने की आदत, साधारण से साधारण व दैनिक जीवन के क्षेत्र से प्रतीकों का चयन तथा सांस्कृतिक और पौराणिक संदर्भों में नया भाव भरने की प्रवृत्ति, उपमानों की नव्यता, विश्वसनीय और सही उपमानों से भाव को सम्प्रेषित करने की प्रवृत्ति, कथन की नयी भंगिमाओं में सीध प्रहार करने वाली शैली, प्रतीकात्मकत, बिम्बात्मक, व्यंग्यात्मक और सम्पर्कात्मक शैली तक का विकास हुआ है।''[23] नयी कविता में छन्द को नयी दिशा मिली है। निराला ने जिस मुक्त छंद का प्रवर्तन किया, उसका वास्तविक विकास नयी कविता में देखने को मिलता है। नये कवियों ने छन्द के पारम्परिक विधान को तोड़कर लय और प्रवाह को छन्द की आत्मा मानकर कविताऐं लिखी। नयी कविता की यह दिशा छन्दमुक्ति और अर्थलय तक जा पहुँची।

काव्य मानवीय संवेदनाओं का गतिशील आख्यान है। वह मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति का कलात्मक, सशक्त और जीवन्त माध्यम है। ये मानवीय संवेदनाऐं और चेतना समसामयिक घटना और परिवेश के घात–प्रतिघात से उत्पन्न और प्रभावित होती है। ''मनष्य की चेतना उसके सामाजिक अस्तित्व से निर्धारित होती है''[24] व्यक्ति पर देशकाल परिवेश, घटना और सामाजिक संघर्ष का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। कवि समाज का सर्वाधिक मुक्त संवेदनशील प्राणी होता हे। परिवेश की सकारात्मक और नकारात्मक प्रवृत्तियाँ उसे प्रभावित करती हैं, इसलिए कवि की संवेदना और संवेदना से निर्मित कविता समाज की क्रोड़ से उत्पन्न होती है। नयी कविता परिवेश धर्मी कविता है, 'वह परिस्थितियों की उपज है'।[25] इसका रचनाकार अपने समय का साक्षात्कार ही नहीं करता, अपितु उससे मुठभेड़ भी करता है। वह जीवन और परिवेश के यथार्थ को उसकी समग्रता में, सूक्ष्म से सूक्ष्म परतों के साथ देखता है। यहाँ तक की उसको देखने के लिए परम्परागत सौंदर्यशास्त्र को अपर्याप्त मानकर नवीन सौंदर्यशास्त्र और नवीन सौंदर्य बोध का विकास भी करता है। वह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, परिवेश, वैज्ञानिक, बौद्धिक और साहित्यिक विचारधाराओं से प्रभावित है। उसका परिवेश के साथ गहरा जुड़ाव है। नयी–नयी कविता मात्र भावात्मक कथा या कल्पना निर्मित अपरिचित वस्तु नहीं है, वह अपने परिवर्तनशील परिवेश के साथ गहरा और आत्मीय संबंध रखती है, इसलिए उसमें प्रमाणिकता, ईमानदारी तथा विश्वसनीयता का समावेश है। आज की जटिल संघर्षपूर्ण, विसंगतिपूर्ण और ह्रासशील स्थितियों से उनका प्रेरित होना स्वाभाविक है। जो स्वाभाविक है, वह अनिवार्य भी बन जाता है यही कारण है कि नयी कविता का अध्ययन प्रभावों के परिपार्श्व में भी किया गया है। प्रभाव पड़ना और उसका अभिव्यंजन भी एक सहज प्रक्रिया है। तथ्य यह है कि इस काव्यधारा ने प्रभाव भले ही ग्रहण किये हों, किन्तु उसकी जड़ों में भारती की मिट्टी और यहीं का खाद–पानी अधिक लगा है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार नयी कविता की दिशाओं पर विचार करने पर स्पष्ट होता है कि नयी कविता की दिशा बहुआयामी है। उसने संवेदना और शिल्प के स्तर पर व्यापक धरातलों का स्पर्श किया है। नयी कविता की दिशा इस अर्थ मे परम्परागत काव्यधाराओं से सर्वथा भिन्न और जनतांत्रिक है। उसकी दृष्टि में अन्वेषण की प्रवृति है तथा दिशा में युग जीवन की व्यापकता।

संदर्भ ग्रंथ :

1. साहित्य कुंज– डॉ.शोभा श्रीवास्तव का लेख 15 अक्टुबर 2020 नई कविता का आत्म संघर्ष– मुक्तिबोध http://m.sahityakunj.net/entries/view/nai-kavita-ka-aatm-sangharsh-muktibodh.
2. मनोज भारती, का लेख नयी कविता की प्रवृत्तियां लेख 21 अगस्त 2012 http://hindikaitihaas.blogspot.com/2012/08/blog-post_21.html
3. *Remarking An Analisation* **VOL-5* ISSUE-9* December- 2020 डॉ.सियाराम मीणा का लेख–** नयी कविता का वैशिष्ट्यः आधुनिक हिन्दी कविता से पार्थक्य के संदर्भ में एक अध्ययन।
4. नयी कविता–4 जगदीश गुप्त, पृष्ठ 17
5. चाँद का मुँह टेढा है : मृक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, 1965 पृष्ठ 63
6. नयी कविता की विशेषता प्रवृत्तियां (लेख) 2018.5.12 https://www.hindikunj.com/2018/05/nayi-kavita.html
7. चाँद का मुँह टेढा है : मृक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, 1965 पृ. 67
8. तीसरा सतक (प्रयागनारायण त्रिपाठी :वक्तव्य) संपादक अज्ञेय, पृष्ठ 22
9. आत्मजयी : कुंवरनारायण, भारतीय ज्ञानपीठ, 1989, पृष्ठ 68
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं.डॉ . नगेन्द्र, पृष्ठ 632
11. नयी कविता का मूल्यांकन : परम्परा और प्रगति की भूमिका पर : डॉ.हरिचरण शर्मा, आशा प्रकाशन गृह,नयी दिल्ली 1972,(पूर्वकथन – ग)

12. .ठण्डा लोहा : धर्मवीर भारती (भूमिका से)
13. नयी कविता : सीमाएँ और सम्भावनाएँ : गिरिजकुमार माथुर, अक्षर प्रकाशन दिल्ली, 1966, पृष्ठ 63
14. नयी कविता : देवराज, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 110002 आवृत्ति 2009पृष्ठ 9
15. नया साहित्य : नये आयाम (स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में दिशाएं) डॉ . रामप्रसाद मित्र, पृष्ठ 53
16. नयी कविता की चिंतन भूमि : डॉ उषाकुमारी, प्रभात प्रकाशन, 2017पृ 9,.43
17. नया साहित्य : नये आयाम : डॉ . रामप्रसाद मित्र, पृष्ठ 65
18. आत्मजयीः कुँवरनारायण, भारतीय ज्ञानपीठ, 1989, पृष्ठ 7
19. सात गीत वर्ष : धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ 34
20. महाप्रस्थान : नरेश मेहता, पृष्ठ 99
21. शब्ददंश : जगदीश गुप्त, 9
22. अन्धायुग : धर्मवीर भारती , किताब महल, इलाहबाद, 1974, पृष्ठ 34
23. नयी कविता : नये धरातल : डॉ.हरिचरण शर्मा, पदम प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ 33
24. सलेक्टेड वर्स : कार्लमार्क्स, पृष्ठ 399
25. नयी कविता : नये कवि :डॉ . विश्वम्भर मानय, पृष्ठ 12